एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कैसे करे ड्रैगन फ्रूट की खेती ?

(*सुमन मीणा एवं कोमल भदाला)
शोधार्थी, उद्यान विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
* suman.meena0369@gmail.com

ड्रैगन फ्रूट या पिताया जिसका वैज्ञानिक नाम हिलोकेरस अंडटस हैं, जो कि केक्टस प्रजाति से संबंध रखने वाला एक बेलनुमा फलदार पौधा है। इसे भारत में कमलम की संज्ञा दी गई हैं। यह 5 से 6 फुट ओर इससे भी अधिक ऊँचाई तक बढ़ता हैं। यह अन्य फलों की तुलना में जल्दी फल देने व कम जलमाँग और अधिक तापमान सहन कर पाने के कारण भारत में अधिक लोकप्रिय होता जा रहा हैं। ड्रैगन फ्रूट, राइबोफ्लेविन (बी2), नियासिन (बी3), एस्कॉर्बिक अम्ल (सी) आदि विटामिन्स, लौह तत्व, पोटेशियम व अन्य पौष्टिक तत्वों से भरपुर होने के कारण इसे सुपर फूड की संज्ञा से नवाजा गया हैं। इस आकर्षक फल का रंग बाहर से लाल - गुलाबी तथा पीले रंग का व अन्दर से गूदा सफेद, गुलाबी और छोटे-छोटे काले बीजों से भरा होता है। इसकी बाहरी त्वचा में हरे रंग की पत्तियां निकली होती हैं, जो कि इसे ड्रैगन की भाँति प्रतित करवाती हैं इस कारण इसे ड्रैगन फ्रूट के नाम से जाना जाता हैं।

उपयुक्त जलवायु

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु उपयुक्त हैं, इसकी वृद्धि के समय तापमान लगभग 25 डिग्री सेल्सियस तथा फल बढ़वार के समय 30-35 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती हैं, लेकिन इसका पौधा अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 5 डिग्री सेल्सियस तक भी सहन कर सकता हैं।

मृदा एवं खेत की तैयारी

ड्रैगन फ्रूट के उत्पादन के लिये 5.5 से 7 पी.एच मान वाली रेतीली, व दोमट, उचित जल निकास वाली मृदा उपयुक्त होती हैं। खेत की अच्छी तरह से जुताई करके उसे खरपतवार मुक्त कर 20 से 25 टन प्रति हैक्टर की दर से अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट मिलाकर खेत तैयार करना चाहिए।

प्रवर्धन एवं पौध लगाने की विधि

ड्रैगन फ्रूट का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग दोनो प्रकार से किया जा सकता है। किंतु कटिंग द्वारा किसान बीज प्रवर्धन की तुलना में जल्दी उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं इसीलिए कटिंग द्वारा पौध तैयार करना व्यावसायिक दृष्टि से अधिक लाभदायक है। कटिंग द्वारा प्रवर्धन करने के लिए 20 सें.मी लंबी कटिंग को पहले तैयार गमलों में लगाया जाता है। (इसके लिए गमलों में अच्छी सड़ी गोबर की खाद, बलुई मृदा तथा रेत को 1:1:2 के अनुपात से भरा जाता हैं) तत्पश्चात गमलो में तैयार कटिंग लगाकर इन्हें छायादार स्थान

पर रख दिया जाता है। अथवा 10-15 सेंटीमीटर ऊँचाई की 10 मीटर लंबी व 1.5 से 2 मीटर चौड़ी क्यारी तैयार कर इसमे भी कटिंग्स लगाकर पौध तैयार कर सकते हैं।

पौध सघनता

अधिक उत्पादन के लिए पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 7- 8 फ़ीट तथा पौधे से पौधे की दूरी 8-10 फ़ीट रखते हैं। गड्ढे की लंबाई, चौड़ाई, गहराई 60×60×60 सें.मी. रखते हैं। इस तरह 450 से 500 पौधे 1 एकड़ में लगाये जा सकते हैं।

ड्रैगन फ्रूट

पौधे को सहारा देना

ड्रैगन फ्रूट को सहारा देने के लिए लकड़ी या कंक्रीट के 5-6 फ़ीट लंबे खम्बे जिन पर गड्ढे युक्त चपटी गोल ओर चौकोर कंक्रीट की रिंग लगाई जाती है। इन खम्भो के चारो कोनो पर एक – एक पौधा लगाया जाता हैं (1एकड़ में 1200 तक पौधे लगाए जा सकते हैं।) तथा सहारे हेतु इन्हें खम्भे से रस्सी की सहायता

से बांध दिया जाता हैं ये पौधे 1-1.5 साल में 5- 6 फ़ीट की ऊँचाई तक आ जाते हैं। जिन्हें कटाई -छटाई कर सहारा दिया जाता हैं।

खाद एवं उर्वरक

पौधों में मृदाजनित रोग एवं कीटो का प्रभाव कम करने हेतु प्रत्येक गड्ढे को क्लोरोपायीरिफोस या 5-7 ग्राम बाविस्टिन से उपचारित कर, इन गड्ढों को 10 से 15 किलो कम्पोस्ट, मृदा व यूरिया, सुपर फास्फेट, पोटाश (100:60:40)मिलाकर भर दिया जाता है इससे पौधे की वानस्पतिक वृद्धि अधिक होती हैं।

किंतु फल आने के समय नाइट्रोजन की मात्रा कम कर पोटाश की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए इससे फलों की वृद्धि अच्छी होती हैं। 100 ग्राम पोटाश पौधों को फूल आने से पहले अप्रैल में तथा फल विकास अवस्था जुलाई-अगस्त और फल तुड़ाई के बाद दिसबंर में देना चाहिए।

इसी के साथ प्रत्येक साल कंपोस्ट या गोबर की खाद की मात्रा 2 से 3 किग्रा तक तथा नाइट्रोजन, फोस्फोरस व पोटाश की मात्रा भी 150-200 ग्राम बढ़ाते रहना चाहिए।

सिंचाई

उष्णकटिबंधीय व केक्टस प्रजाति का फल होने के कारण इन पौधों को दूसरे पौधों की तुलना में कम पानी की आवश्यकता होती है। वर्षा ऋतु के अलावा शुष्क मौसम में अच्छी पैदावार के लिए कम अंतराल में बार- बार सिंचाई करते रहना आवश्यक हैं। इस प्रकार रोपण, पौध वृद्धि एवं फल विकास के समय तथा गर्म व शुष्क मौसम में बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके लिए सिंचाई की बूंद-बूंद पद्धति का उपयोग करना चाहिए।

कीट एवं व्याधियां

सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट कठोर वातावरण को सहन कर पाने में सक्षम हैं तथा इसमें कीट और व्याधियों का प्रकोप भी कम ही होता हैं। तथापि रस चूसने वाले कीटो से बचाव के लिए मेंकॉज़ेब 0.5 % का छिड़काव करना चाहिए।

अधिक जल भराव की स्थिति में इसमे तना सड़न जैसी समस्या का सामना करना पड़ सकता हैं। इस हेतु उचित जल निकास की व्यवस्था करनी चाहिए।

तुड़ाई

प्रायः ड्रैगन फ्रूट 10 से 11 महिने में फल देना शुरू कर देता है। सामान्यतः मई और जून में फूल लगते हैं तथा जुलाई से दिसंबर तक फल लगते हैं। पुष्पन के एक से दो महीने बाद फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस अवधि के दौरान इसकी 5 से 6 तुड़ाई की जा सकती है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई का सही समय रंग परिवर्तित होने के तीन-चार दिनों बाद का होता है। फलों की तुड़ाई दरांती या हाथ से की जाती है।

उपज

ड्रैगन फ्रूट 1 साल में ही फल उत्पादन देने लगता हैं किंतु 5 से लेकर 15 साल की अवस्था तक पौधा सर्वाधिक उत्पादन देता हैं। ड्रैगन फ्रूट में किस्म के अनुसार फल का वजन लगभग 300 से 800 ग्राम तक होता है, इस प्रकार एक सीजन में इसकी औसत उपज 5 से 6 टन प्रति एकड़ तक होती है। तथा इसका बाजार मूल्य 80 से 250 रुपए किलो तक मिल जाता है, जो कि इसकी किस्म पर निर्भर करता हैं।